भजन

तेरी मेरी निसबत अमर,फिर क्यूं तुमसे हम बेखबर
मैं तो सूती नीद में पर, मेहर तेरी का है असर
तेरी मेरी निसबत अमर

1–क्या पता था क्या खबर, माया यूं सतायेगी
चाहते ना हम मगर, फिर भी ये भुलायेगी
कैसी है ये माया बज्जर, कैसे होवे इसमे बसर
तेरी मेरी निसबत अमर

2– निपट कठोर मैं ढीठ भई, तेरा प्यार न जान सकी
तुमने तो मेहर करी, तुमको न पहचान सकी
जाने कब होगी ये फजर, कैसे तय होगा ये सफर
तेरी मेरी निसबत अमर

3– क्या है अपना बल पिया, तेरी मेहर को गा सकें
मेरा मुझमे कुछ नही, तेरे बल पे झूमते
चाहत मेरी मेरा भरम, मेहर तेरी तेरा करम
तेरी मेरी निसबत अमर

4 – वास्ते निसबत के तुम, धाम के सुख ले आये
चल के आये आशिक बन, रूहो ने दीदार पाये
श्यामा जी है आनंद अंग, रूहें श्यामा जी के संग
तेरी मेरी निसबत अमर